॥ श्रीः ॥

प्रकाशक के दो शब्द.

प्यारे हिन्दी प्रेमियों,

अन्यान्य उपयोगी विषयोंपर छोटी बडी पुस्तकें प्रकाशित कर हिन्दी के द्वारा लोकसेवा करने का काम मैंने १९१४ में प्रारंभ किया. तदनुसार आज तक ९ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं: तीन लिखित तयार हैं और दो लिखी जा रही हैं.

स्वार्थ त्यागी मेरे जनक पं. ललितापति शास्त्रीजी जो लश्कर हाईस्कूल में हजारों विद्यार्थियों को पढा चुके हैं और जो संस्कृत के अच्छे विद्वान होकर हिन्दी साहित्य के योग्य ज्ञाता हैं, कई दिनों से विचार कर रहे हैं कि " ललितवाग्विलास " सदृश कोई ग्रंथ तयार होकर प्रकाशित हो, परन्तु ग्रहस्थाश्रम का सारा भार सम्हालकर मुझे यथेष्ट विद्याभ्यास का मौका देने के कारण उन्हें अभी तक इतना अवकाश नहीं मिला है कि अपने हृद्गत भावों को लेखनी द्वारा पुस्तक रूप में प्रकट कर सकें. ये विचार जो इस पुस्तक में व्यक्त किये गये हैं और जो २८ जून १९२३ के जयाजी प्रताप में प्रकाशित हो चुके हैं आज आपके सामने अल्पारम्भाः क्षेमकराः समझ से स्वतंत्र पुस्तक रूपमें इस आशा से रक्खे जाते हैं कि इन्हें पढकर आप कुछ लाभ उठावें संसार में जरा चैतन्य तथा सजग हो जावें और शास्त्रीजी इस निःसारता का विचार कर शीघ्रही अपने अमूल्य विचार पुस्तक रूपमें प्रकाशित करने का उपकार करें.

विक्टोरियां कॉलेज, लश्कर जुलाई १ | शुभेच्छु, बालकृष्ण.

॥ श्रीः

निस्सार संसार की समालोचना

उस सर्व शक्तिमान् जगदाधार जगन्नियन्ता परात्पर परमेश्वर के लिये कोटिशः धन्यवाद और प्रणाम परम्परा हैं कि यह चराचर विश्व जिसका लीलाविलास है, जिसे निसर्ग, सृष्टि, नेचर कहते हैं, यह क्या है ? इसके सूक्ष्म तथा स्थूल रूप रूपान्तर देखने से उस विश्वंभर की अतर्क्य शक्तियां अनन्तानन्त प्रतिभासित होती हैं. पर, आश्चर्य यह है कि यह अज्ञानी जड मनुआ तनिक भी तो स्थिरता के साथ विचार परायण नहीं होता कि उन दिशाओं को भी झांक लेवे. हां जिन महापुरुषों ने सर्वरीत्या लय लगाकर कोशिश की वे ही सर्वथा धन्य हैं कि " आप तरे अरु औरन तारे. "

यह हर एक को अनुभव है कि पैदा होते ही सारी चीजें नहीं जानी जातीं. हमारे प्रिय विद्यार्थिगण बखूबी जानते हैं कि शालाप्रथम श्रेणी प्रवेश में वे कितने ज्ञानी थे और आते ही शाला मार्ग, स्थान, गुरुदर्शन, पुस्तक नाम, भिन्न २ प्रकारादि ज्ञान शीघ्र ही प्रकाशित होने लगे. कालान्तर में ही सर्वोच्च वर्ग मैट्रिक शिक्षा प्राप्ति तथाच सिद्धि से योग्यता सन्मुख उपस्थित हुई. कहिये, क्या योग्यता और कौनसी ? उत्तर यही कि पदार्थ ज्ञान शक्ति की उत्पत्ति और अधिकारानुरूप फल प्राप्ति. इससे इन्हें यह समझ आई और आनी चाहिये कि जब इतने से ऐसा

तो बढ़कर कितने से कैसा. जो धीर धीर इसी पर निर्भर रह आगे बढ़े अल्प ही समय में अपने कार्यों को प्रबल बनाकर आदर्शरूप बनते चले. क्योंकि यह लीला अगाध है इसी से दुरूह है, महा कठिन तब जो कृतार्थ बन विरम रहे वे तो उतना ही लाभ लेकर रह गये. पर अब मैदान, दान, ध्यान और सन्मान की बारी है कि हम योग्य विचार कर सकें कि क्या अगाध, किस की और कैसी यह सब लीला है. तब समझ सकते हैं कि महा महा प्रज्ञासाध्य जो एम. ए, या शास्त्री तथा आचार्य पद वह कैसे मिला और वह भी भिन्न २ विषयक अनेक रूप अर्थात् एतावता भी पराकाष्ठा नहीं आई, कर्तव्यों के समूह के समूह मौजूद हैं. जब ऐसी कर्मदशा है तब क्यों नहीं चित्त लगाते. स्मरण आया कि जो दुनियां को चला रहा है उसे भूले ही जाते हैं. पर वह हर बात में ऐसा व्याप्त है कि भूला जा सकता नहीं.

उसे भूलने का कारण हमारे कर्म हैं जिनके नाम ये हैं. प्रारब्ध, संचित, क्रियमाण. इनकी सिद्धांतित दशा ऐसी है कि एक दूसरे को दबाते, काटते, बढ़ाते और बदलते हैं, पर जो प्रारब्ध हैं उनका फल भोगने से ही बनता है. बतलाइये बेचारा परवश यह जीव क्या कर सकता है. महात्माओं की वाणी " जो न छुडावे पीव " तब सब आफतों से बचाने वाला दीनदयालु वही भगवान, खुदा, अल्लाताला, जगदीश्वर है.

हिन्दुओं में सर्वोपरि विराजमान परम मार्ग दर्शक चार वेद हैं बाद में शास्त्र. मुसलमानों में कुरानशरीफ. ये जांच जांच कर बतलाते हैं कि सिवाय नारायण के इस अगाध भवसागर पार लगाने वाला कोई भी नहीं. तब मेरे भाइयों, क्यों बार बार चक्कर खाते हो. जरा तो सोच देखो कि कोई भी साथी होता है क्या? श्रीमद्भागवत में लिखा है " देहापत्य कलत्रादिष्वात्म सैन्येष्व सत्स्वपि, तेषां प्रमत्तो निधनं पश्यन्नपि न पश्यति " यानी बदन, औलाद, जोरू वगैर: ये इस जीव की फौज हैं और झूंठे हैं; क्योंकि चंद रो जाना हैं. पर यह मस्ताना ऐसा है कि उन्हीं में लिपटा हुआ धीरे धीरे उनका नाश भी देखता हुआ गौर नहीं करता कि जब बाबा न रहे तो कौन रहने आया है.

इसी जगह एक सांई साहब का हाल है कि वे घूमते घूमते एक राजा के महल में जा निकले और वहां मसनद पर जा बैठे. ज्योंही लोगों ने देखा त्योंही मना किया, पर सुनताकौन है आखिरकार बादशाह ने आकर पूछा " यहां क्यों बैठे हो " आप बोले "बाबा सराय समझ कर आ बैठा" बादशाह ने कहा " यह हमारे रहने की जगह है सराय नहीं " आपने पूछा " इससे पहिले कौन रहता था" उनने कहा "हमारे वालिद" और "पहिले" "बाबा" और "पहिले" जब कई पीढियां बताई गई तब फौरन साईं साहब फरमाने लगे " जब इतने रह रहकर चले गये तब सराय नहीं तो क्या ? " बादशाह को भी समझ आई, और संसार को निःसार समझने लगे.

"हाड मांस रुधिर करेजो कफ वायु पित्त पूर रहा, कीकर कर्कंकसों तमाम हैं; कहैं पद्माकर सुहाय पांवऊरू उर और सब अंग मिलि पायो देह नामहै. भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला निज और जन, याके संग आगत न कोई घर न धाम है; है न कछू काम की छदाम की सुनैनमुर्दे, चाम की खलीती को वृथाही इतमाम है."

तो सबसे नगीच यह बदन उसका भी यह हाल तिसपर भी छोड ही जाता है. सच है ये क्षण स्थायी कितने उपयोगी हो सकते हैं. हां जो त्रिकालदर्शी, सर्व व्यापक परमेश्वर है, हर जगह हर वक्त मौजूद, हर हालत को निहार रहा है यदि मुहब्बत (प्रीति) भक्ति यहां लगाई जावे तो सनद गुम तो नहीं होगी पर ये सुने कौन समझे कौन, कहा भी तो है कि दुनिया दुरंगी है. तब सुनने वाले समझने वाले भी हैं. हमारे शिष्य वर्ग हमारे उपदेशों को बराबर याद करते और पास होते हैं, पर जैसी कि कहावत है "बोलबो न सीखो सब सीखो भयो घूर में" इसी तरह यदि ये बातें न समझीं तो पढे भी पढ़े ही हैं.

उस विश्वेश्वर के नियम भी ऐसे अप्रतिहत हैं कि निरन्तर जागृत हैं, जैसे आग का जलना, हवा का चलना, जल का बहना तथा शीतलता लाना. कभी रूपान्तर नहीं बदलते हैं. ऐसा होने पर भी आप सत्यप्रिय हैं, असत्य से मुख मोडे हुए हैं.

अज्ञान, घमण्ड, चौर्य, पातक इत्यादि नरक सामग्रियां हैं. यहां एक ऐसी आख्यायिका है जो वेद शिरो भाग केनोपनिषद् से उद्धृत है.

एक समय देवदानवों में घोर युद्ध मचा कि सारे देवं दैत्यों ने मचमचा डाले, हाहाकार होने लगा, तब करुणासागर सत्यउजागर परिणाम दूरदर्शी विश्व व्यवस्थापक व्यापक परब्रम्ह अपने अमोघ अंशों को देवों में प्रविष्ट कराते भये कि वे निस्तेज तेजस्वी बन देववृन्द दैत्यवृन्दों को मारमार भगाने लगे. अन्त में महेन्द्र का ही जय हुआ, परें कहा है कि " छलके ओछे नीरघट पूरे छल के नाहि" तो इन्द्र जो ३३ कोटि देवों के नायक उछलने लगे कि प्रबल दैत्यों को मार बिछाया, मेरे समान त्रिभुवन में कौन पराक्रमी है, पर पहिले ही कहा है कि गर्वरूप गहन वन के लिये तो आप रूप अग्नि ही है. क्या विलक्षण रचना है कि तत्काल ही गण में यक्षरूप दर्शन दिये. उस आकृति को देख इन्द्र ने अग्नि को आज्ञा दी कि जाकर समझो कि कौन? अग्नि पहुंचे. यक्ष ने पूछा कि तू कौन? अग्नि कहने लगा कि मैं अनल, तत्काल भस्म कर डालता हूँ. यक्ष ने एक तिनका आगे डाला तब तो बहुत जोर चलाया पर कुछ भी तृण पर प्रभाव न पड़ा. लौट आया. बाद इसी तरह वायु गया कि तिनका हिला भी न सका. ये दोनों देव चकित हुए, तब परीक्षा करने इन्द्र खुद गये. वह

यक्ष निगाह से गायब होगया. तब तो इन्द्र परेशानी के दरिया में डूबे गोता खाते नजर आये. उसी समय सुवर्ण अलंकृत रुचिर दर्शना एक प्रौढ स्त्री दीखने लगी कि इन्द्र और भी परेशान हुए. पूछा ये कौन था, कहां गया. उत्तर होश में रहो, होशियार रहो, विचार करो, गुनाह माफ कराओ, पहिले ही क्यों न जीते, अब इतना घमंड दिखलाते हो, देख उसे क्यों न लेते, वह जिताने वाला दूसरा ही है, उसी को ब्रह्म परमेश्वर खुदा कहते हैं.

तनिक आगे बढो, गौर से, मिन्नत से, वफादारी से याद करो, फौरन इन्द्र को दर्शन हुए. भला करोडों आफताब इकट्ठा हो जिस रोशनी को रोशन नहीं कर सकते वह अजबदेख इन्द्र भी अपनी चूक समझ स्तुति करने लगे. कहिये बडों बडों का यह हाल तब अदना का क्या ?

आप समझे कि यह औरत कौन कि जिसने इन्द्र को भी डाटा, पर दर्शन ही कराया जिससे इन्द्र साहब भी कृतार्थ हो उसी के ताबेदार हो अहसानमंद हुए. मैं खयाल करता हूं आप तो बडे दाना हैं जरूर जांच लिया होगा कि ये बाई साहबा कौन थीं. ये वेही जिन्हें विद्या कहते हैं. इसी से आप समझ सकते हैं कि इसके सिवाय त्रिभुवन में पच पचकर थक जावें, पर कुछ हासिल हो सकता है क्या ? कहा

है " जोगी जुगत जानी नहीं कपडे रंगे तो क्या हुआ ". क्योंकि रंगे गीदड शेर की लियाकत हरगिज नहीं बतला सकते.

बुराई की बात नहीं " जोगी ताहि न जानिये, जो गीताहि न जान " यों तो सारी दुनियां साधु, महात्मा, फकीरों से ही बस रही है पर जानने वाले विरले ही मिलते हैं. रंग ही तो है जिस पर चढा सो चढा, महाराज भर्तृहरि अपने नीति शतक में लिखते हैं :—

"सिंह: शिशुरपि निपतति मदमलिन कपोल भित्तिषु गजेषु,
प्रकृतिरियं सत्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः"

कहां तो वे मतवाले हाथी और कहां शेर का जरासा बच्चा, पर शेर ही तो है, फौरन गंडस्थल को फाडने झपटता है. तब सिद्धांत यह है कि तेज की बुनियाद उम्र नहीं हो सकती. तेजस्वियों की आदत ही तेज का बायस है.

हमारे भक्तशिरोमणि दैत्याधिराज राज कुमार महाराज प्रल्हादजी हुए कि जिनके लिये भगवान ने ऐसा रूप जो दुनियां में असंभव, संभवकर प्रकट किया कि त्रिभुवन कण्टक हिरण्य कशिपु उरस्थल नखांकुर तीव्रशस्त्रों से विदारण किया और पृथ्वीको उभारा. प्रल्हाद की चाल ऐसी है कि अग्नि, जल आदि प्रभुकृपा से उनके सामने कुछ न चलासके. फिर भी चाल ऐसी कि अनन्त रंगे सुधरे, हरेभरे विचरे और मुक्ति

श्रीमपुरे

प्रो. बालकृष्णपति बाजपेयी एम्. ए.

मेम्बर अलाहाबाद युनिवर्सिटी कोर्ट

सैक्रेटरी कॉलेजियन्स लश्कर.

पँच सहकारी चिट्ठा प्रथा लश्कर,

की पुस्तकें.

---

1. जीवनोद्देश एक सही उटपटांग .... |)
2. Circles and Recipes in Economics ... 5as
3. सहस्या शिवपंचाक्षर हिन्दीवर्णन स्तोत्र .... -)
4. शिक्षण पर कतिपय अनुभव जन्यविचार .... ≡)
5. बच्चों पर निर्दयता की रोक .... ≡)
6. बालशिक्षा सम्बन्धी स्त्रियों का कर्तव्य .... -)
7. आंग्ल अर्थ शास्त्र के जन्मदाता ऐडमस्मिथ .... |)

हिन्दी में अर्थ शास्त्र दुअन्नी पुस्तक माला.

1. उत्पादकों में बटोतरा Distribution.
2. सहकारिता Co-operation.
3. रुपया पैसा धन Money.

हिन्दी विद्यार्थी—जयपुरराजगुरु, पं. मुकुन्द शास्त्री पर्वणीकर. |)